नेहरू बाल पुस्तकालय

अप्पू की कहानी

नवकृष्ण महन्त

अनुवाद

विनोद रिंगानिया

चित्रांकन

रबीन बरुवा

एकः सूते सकलम्
NBT. INDIA

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

अजय ने दूर से देखा कि पिताजी आ रहे हैं। उनके पीछे-पीछे चार लोग थे। वे एक स्ट्रेचर जैसी चीज पर कोई भारी-सी चीज ढोकर ला रहे थे। अजय कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। सामने फूलों की क्यारियां थीं। मजदूरों ने स्ट्रेचर जैसी चीज वहीं रख दी। अजय के पिता ने चौकीदार को डाक्टर बुला लाने के लिए भेज दिया।

अजय पास गया। देखा कि हाथी का छोटा-सा बच्चा है। वह लगभग मरी हुई-सी हालत में स्ट्रेचर पर पड़ा हुआ था। उसकी सूंड़ एक तरफ लटकी हुई थी।

अजय ने पूछा, "नन्हा हाथी! यह मर गया क्या?"

"मरा नहीं है रे, बेहोश हो गया है। देखो, पीठ पर कितना बड़ा घाव हो गया है।" पिता ने घाव दिखाते हुए कहा।

"घाव कैसे हो गया? साथ में इसकी मम्मी नहीं थी?" अजय की उत्सुकता बढ़ गयी।

"शायद किसी जंगली जानवर ने काट लिया होगा। हो सकता है इसकी मां इसे मरा जानकर छोड़कर चली गयी हो।" पिता कुछ और कहते, इससे पहले ही डाक्टर साहब आ गये।

अजय का ध्यान भी अब डाक्टर के काले बैग पर था। वह उनका काम देखने लगा।

डाक्टर ने हाथी के बच्चे को एक टीका लगाकर घाव पर पट्टी बांध दी।

बीस दिन बीत गये। बच्चा उठने लायक हो गया।

एक बड़ी बोतल के मुंह पर साइकिल की ट्यूब बांधकर पिता ने निप्पल बना लिया। यह सब देखकर अजय की खुशी का ठिकाना नहीं था। वह इन सब में इतना खो जाता कि खाना खाने के लिए भी उसे कई बार बुलाना पड़ता। पिता बोतल से बच्चे को दूध पिलाने की कोशिश करते। यह सब देखकर हंसते-हंसते अजय के पेट में बल पड़ जाते।

उसे लगता मानो हाथी का बच्चा अपनी छोटी-सी सूंड़ इधर-उधर डुलाकर कह रहा हो, "जल्दी करो, मुझे बड़ी जोरों की भूख लगी है।"

एक दिन दूध पिलाते वक्त पिता ने अजय से कहा, "हाथी के बच्चे में इन दिनों काफी बल आ गया है। वह अब एक-दो दिनों में तुम्हारे साथ खेलने लायक हो जायेगा। खेलने के लिए उसे एक नाम भी तो देना होगा?"

अजय कुछ देर सोचता रहा। अच्छा-सा नाम नहीं सूझने पर उसने पिता से कहा, "आप ही एक नाम दे दीजिए पापा, मुझे तो कोई अच्छा-सा नाम सूझ ही नहीं रहा है।"

पिता ने कुछ क्षण सोचकर कहा, "अप्पू कैसा रहेगा?"

"अ-प्-ऊ! वाह कितना अच्छा नाम है पापा!" अजय ने उत्साह और प्यार से हाथी के बच्चे के सिर पर हाथ फिराकर कहा, "अय, अप्पू! सुन रहे हो न? तुम्हारा नाम आज से 'अप्पू' हो गया। अपूऊ।" अप्पू ने अपनी नन्ही-सी सूंड़ से अजय के पेट पर छुआ। मानो वह कह रहा हो, "मुझे पसंद आया यह नाम।"

धीरे-धीरे अप्पू के शरीर में ताकत आती गयी। वह बाहर-भीतर आने-जाने लगा। अजय के साथ खेलने भी लगा। था तो वह जंगली हाथी का बच्चा,
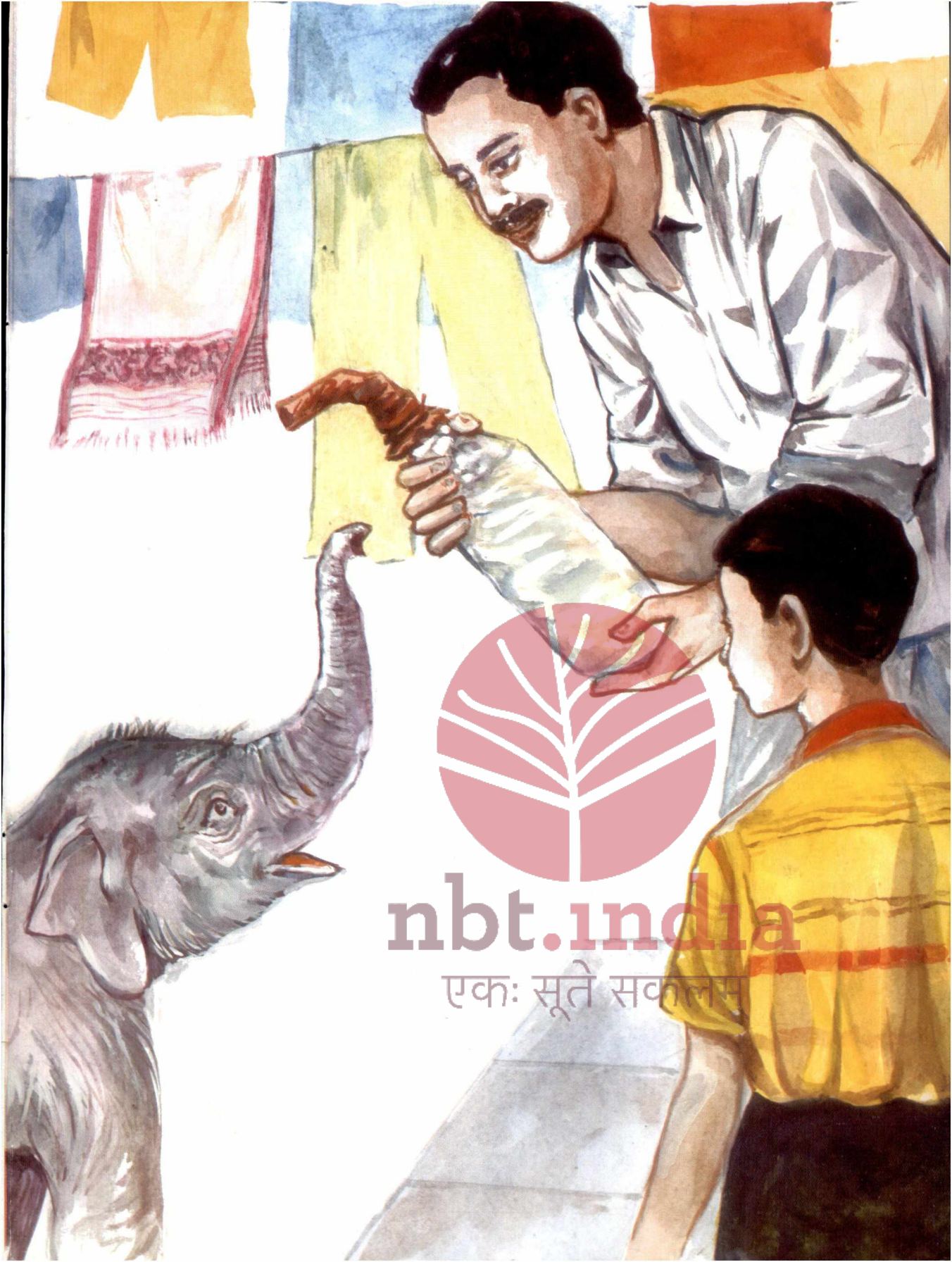
लेकिन घर के तीनों लोग अब उसे अपने जैसे लगने लगे। कुछ ही दिनों में वह परिवार का एक सदस्य बन गया। सुबह नाश्ते के समय जब तक उसे जैम लगाया हुआ ब्रेड का टुकड़ा न दिया जाता या पके केले न दिए जाते, वह नाश्ते की टेबल के पास से टलता न था। कुर्सी के पास खड़ा-खड़ा वह खाने की चीजें सूंघता रहता। एक दिन ब्रेड और केलों की अपनी खुराक पाने के बाद भी वह वहां से हटा नहीं।

"मम्मी, अप्पू को कुछ और खाने को चाहिए।" अजय ने अप्पू की पीठ पर हाथ फिराते हुए कहा।

"पापा, क्या इसे थोड़ी चाय दे दूं?"

"दे दो। गरम चाय से जल सकता है, देखना।" पिता अपनी चाय खत्म कर बाहर निकल गये।

"अबे ओ पेटू, चाय पी ले, आ!" अजय ने अप्पू को बुलाया।

अप्पू ने अजय की ओर देखकर सूंड़ उठाकर आवाज निकाली, "हुऊफ! देखो, यह मुझे पेटू कह रहा है? नहीं पीनी मुझे चाय-वाय।"

उसका यह हावभाव देखकर अजय ठठाकर हंस पड़ा।

"ठीक है, ठीक है! तुम पेटू नहीं हो। अब तो चाय पी लो, आओ।" उसने अप्पू की सूंड़ उठाकर कप में पड़ी ठंडी चाय उसके मुंह में डाल दी। चाय गटककर अप्पू आंखें मूंदकर सिर हिलाने लगा।

शायद वह कह रहा था, "वाह, वाह! यही तो असली चीज मिली है। बड़ी स्वादिष्ट है। मुझे रोज दिया करो।"

उस दिन से मां एक मग में अप्पू के लिए भी ठंडी चाय लाने लगी। बाद में अप्पू खुद ही सूंड़ से मग पकड़कर चाय पीना सीख गया।

अजय के पिता बीच-बीच में जंगल जाते। वहां से केले के तने के बीच का हिस्सा, बांस की कोमल टहनियां और पेड़ों के कोमल पत्ते लाकर अप्पू को देते। वन अधिकारी पिता जानते थे कि अप्पू बड़ा होकर यही सब खायेगा।

बड़ा होने के बाद बिस्कुट और केलों से उसका पेट नहीं भरेगा। शुरू-शुरू में अप्पू यह सब खाना तो दूर, सूंघता भी नहीं था। दी हुई चीजें वह इधर-उधर फेंक देता। कभी-कभी पिता के शरीर पर भी। इसके बाद वह रसोई की ओर तेजी से चला जाता। वहां अजय र्क मां काम कर रही होती थी। रसोई में मां का दिया बिस्कुट चबाते हुए वह आता और पिता को पीछे से धक्का-सा मारता।

पंद्रह-बीस दिन बाद अप्पू उसे दिए गये केले के तने या बांस के कोमल हिस्से एक-दो ग्रास खाने लगा। धीरे-धीरे उसे ये चीजें स्वादिष्ट लगने लगीं। महीने भर बाद तो वह इन सब चीजों को खाने में होशियार हो गया। हालांकि तब भी वह सुबह की चाय का लोभ नहीं छोड़ पाया।

अजय के घर एक चितकबरा कुत्ता था। उसका नाम था भुलु। अप्पू को घर के लोग ज्यादा चाहने लगे हैं, यह बात भुलु देख रहा था। मन-ही-मन वह अप्पू से ईर्ष्या करने लगा था। एक दिन सामने बरामदे में खेलना चाहने पर अप्पू ने उसे ठोकर मारकर गिरा दिया था। उस दिन के बाद से वह अप्पू को बाहर अकेले में मिलने पर दूर से भौंकता। जैसे वह अपनी भाषा में कहता, ‘‘लंबी नाक वाले मूर्ख, दूं क्या एक ठोकर?’’

अप्पू भुलु के भौंकने पर कोई ध्यान नहीं देता था। इससे भुलु का गुस्सा और बढ़ जाता। वह अप्पू को पीछे से सावधान करता, "तुम क्या कर सकोगे मेरे साथ! ऐसा काटूंगा कि तुम्हारी लंबी नाक कटकर गिर पड़ेगी। हुं!"

काफी कोशिश के बाद भी भुलु को अप्पू के साथ झगड़ा करने का कोई

बहाना नहीं मिला। आखिर जब कोई नहीं देख रहा होता, तब वह अप्पू के खाने पर एक टांग उठाकर पेशाब कर देता और पिछवाड़े की ओर सूखी लकड़ियों के गोदाम में घुसकर सो जाता। बुरी गंध के कारण अप्पू खाना छोड़ देता। इधर अजय के पिता यह सोच रहे थे कि आखिर अप्पू ने खाना क्यों छोड़ दिया।

अपनी इस चाल से भुलु ने करीब एक सप्ताह तक अप्पू का खाना-पीना बंद करा दिया था। उसे बड़ा मजा आया था। लेकिन एक दिन वह रंगे हाथों पकड़ा गया। उस दिन भुलु जरा असावधान था। अजय के पड़ोस में जिन्तु का घर था। जिन्तु का भी टॉम नामक एक कुत्ता था। वह उसे 'डरपोक', 'सींकिया पहलवान' कहकर भी चिढ़ाता था। इन गालियों से भुलु को बड़ा गुस्सा आता। इन्हीं सब के बीच उस दिन भुलु दौड़कर अप्पू के खाने के सामान के पास आया था अपना कारनामा करने। उसे ध्यान ही नहीं रहा कि गुलाब के पौधे के पीछे अप्पू छिपा था।

अप्पू के मन में तो पहले ही संदेह था। भुलु भला उसके खाने के स्थान पर क्या करने आया है? अप्पू जल्दी से बाहर निकल आया। जब भुलु अपना काम कर रहा था तभी पीछे से आकर अप्पू ने उसकी पूंछ पकड़ ली। भुलु को पकड़े हुए अप्पू ने उसे फूलों की क्यारियों की ओर खींच लिया। गुस्से और दर्द से भुलु पहले ही अधमरा हो गया था। वह छोड़ देने के लिए कीं-कीं कर अप्पू से प्रार्थना करने लगा। उधर यह दृश्य देखकर टॉम इतना हंसा कि हंसी के कारण उसकी जंजीर झनझना उठी।

चीखना-चिल्लाना सुनकर अजय बाहर आया। काफी समझा-बुझाकर अप्पू की सूंड़ से भुलु को छुड़ाया। अप्पू के चंगुल से छूटते ही भुलु सीधे पिछवाड़े वाले गोदाम में घुस गया। काफी देर तक वह शर्म और दर्द से रोता रहा। उसी दिन से अप्पू भुलु का दुश्मन बन गया। अप्पू को देखते ही वह कहीं और खिसक लेता। रात को कभी सियार की हुआं-हुआं सुनकर

वह भी अपनी वीरता के गीत गाता। उसके गाने का सुर सियारों की हुआं-हुआं जैसा ही होता।

अप्पू को पता नहीं था कि भुलु उससे रूठा हुआ है। वह अजय के साथ घूमने में ही मस्त था। आती-जाती गाड़ियों में से कई उनके पास आकर

रुकतीं। गाड़ी में सवार मां-बाप अपने बच्चों को अप्पू को पास से देखने के लिए उतार देते। इन सबसे अप्पू घमंड से फूलकर कुप्पा हो जाता—मानो उस जैसा हाथी कहीं और है ही नहीं। कोई-कोई उसे खाने को केला या बिस्कुट देता। एक दिन घूम-फिरकर जब वे दोनों घर वापस आये तो उन्होंने एक नयी चीज देखी।

पिछले दो-एक दिनों से पाखी नाम की कुतिया उनके घर में घूमने-फिरने लगी थी। भुलु भी उसके पास जाकर उसका हाल-चाल पूछता। इसे देखकर जंजीर से बंधा टॉम वहीं से भौंकता, "अबे ओ हड्डी चोर, खबरदार! मेरी दोस्त से बात करने की हिम्मत कैसे हुई तेरी?"

टॉम की धमकी के डर से भुलु आगे बरामदे की ओर पाखी से ज्यादा नहीं मिलता। उस दिन शायद उसका भाग्य अच्छा नहीं था। आगे के बरामदे में पाखी की कूं-कूं सुनकर वह उसके पास चला गया। पास जाकर उसने चोर नजरों से देखा, बगल के घर में कहीं टॉम तो नहीं बंधा है। नहीं, टॉम को जिन्तु जंजीर खोलकर पिछवाड़े नहलाने के लिए ले गया था। इससे भुलु निश्चिंत होकर पाखी के साथ खेलने में व्यस्त हो गया। भुलु और पाखी की कीं-कीं की आवाज टॉम के कानों में पड़ी। उसने एक झटके से जिन्तु के हाथ से जंजीर छुड़ा ली और बाहर की ओर दौड़ा। वहां पाखी के साथ भुलु खेल रहा था। यह देखकर टॉम आपे से बाहर हो गया। उसने भुलु को पकड़ लिया और काटने लगा। भुलु कीं-कीं करके चिल्लाने लगा! इससे टॉम का उत्साह और बढ़ गया।

इसी समय अप्पू और अजय घर के फाटक तक आ गये। फुलवारी में भुलु को चिल्लाते देख दोनों दौड़कर वहां आये। अजय ने 'दुत-दुत' कहकर टॉम को भगाने की कोशिश की। लेकिन टॉम का भुलु को छोड़ने का इरादा नहीं था। उधर अप्पू को भुलु की यह हालत देखकर पहले तो मजा आया। ...भुलु ही तो उसके खाने में पेशाब कर दिया करता था। लेकिन अब भुलु

की कूं-कूं-कूं-कूं सुनकर उसके मन में दया उपजी। आखिर भुलु भी तो इसी घर का सदस्य है। उसने पीछे से जाकर सूंड़ से टॉम की टांग को पकड़ा और बाहर की ओर उछाल दिया। गले में बंधी जंजीर बज उठी—झनून्न। जंजीर फाटक में अटक गयी थी। इस कारण टॉम फाटक से लटका रह गया। वह चिल्लाने लगा—''भौं-भौं, भौं-भौं।'' भुलु ने मौका देखकर टॉम को कई जगह काट खाया। तब तक जिन्तु आकर उसे वापस ले गया। भुलु वापस लौटकर अप्पू के पास आ गया। वह अप्पू के पैर चाटने लगा और पूंछ हिलाने लगा।

''मुझे माफ करना, भाई! मैंने तुम्हें गलत समझा था।''

अप्पू न अपनी सूंड़ से भुलु की पीठ को सहलाकर उसे माफ कर दिया।

इस बीच टॉम और भुलु की लड़ाई का तमाशा देखने के बाद पाखी न जाने कहां गायब हो गयी। उस दिन से भुलु और अप्पू अच्छे दोस्त बन गये।

इस तरह एक साल बीत गया। इस बीच अजय के इम्तहान भी हो गये। वह कक्षा में प्रथम आया था। अप्पू भी काफी बड़ा हो गया था।

अप्पू को अच्छी तरह देखते हुए एक दिन पिता ने अजय से कहा, ''अजय, देखो अप्पू अब कितना बड़ा हो गया है। इसे अब ज्यादा दिन घर पर नहीं रख सकते।''

''क्यों, पापा?''

''हम तो हमेशा यहां रहने वाले नहीं,'' प्यार से अजय के माथे पर हाथ फेरते हुए पिता ने कहा। ''मान लो कल हमारा दूसरे शहर में तबादला हो

जाता है तो अप्पू को वहां कहां रखेंगे? एक दिन तो यह विशाल हाथी बन जायेगा। तब हमारे साथ रहने से उसका पेट नहीं भर पायेगा न!"

"तब वह कहां रहेगा, पापा?"

"सुनो बेटे, दरअसल अप्पू है तो जंगली हाथी का ही बच्चा। सो वह इसी जंगल में रहेगा। क्यों ठीक है न?"

पिता को लगा कि अजय को कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। उन्होंने उसे समझाया, "अप्पू को हम अभी थोड़े छोड़कर जाने वाले हैं। पहले उसे जंगल में घुमायेंगे। फिर वह जब थोड़ा और बड़ा हो जायेगा तभी हम उसे छोड़ेंगे। समझे न मुन्ने राजा!"

"ठीक है पापा।" अजय ने ज्यादा बहस नहीं की।

"ठीक है, तो कल से ही हम अप्पू को जंगल में घुमाने ले जायेंगे।" पिता की इस बात से अजय को खुशी हुई। रात को सपने में उसे जंगल दिखाई दिया, जहां वह टार्जन की तरह घूम रहा था।

दूसरे दिन अप्पू को लेकर अजय और उसके पिता नामबर जंगल में गये। अप्पू बड़े दिनों तक आदमियों के बीच रहा था, लेकिन जंगल का जीवन भूला नहीं था। इसलिए वह जंगल में घुसते ही चंचल हो गया। सबसे पहले एक
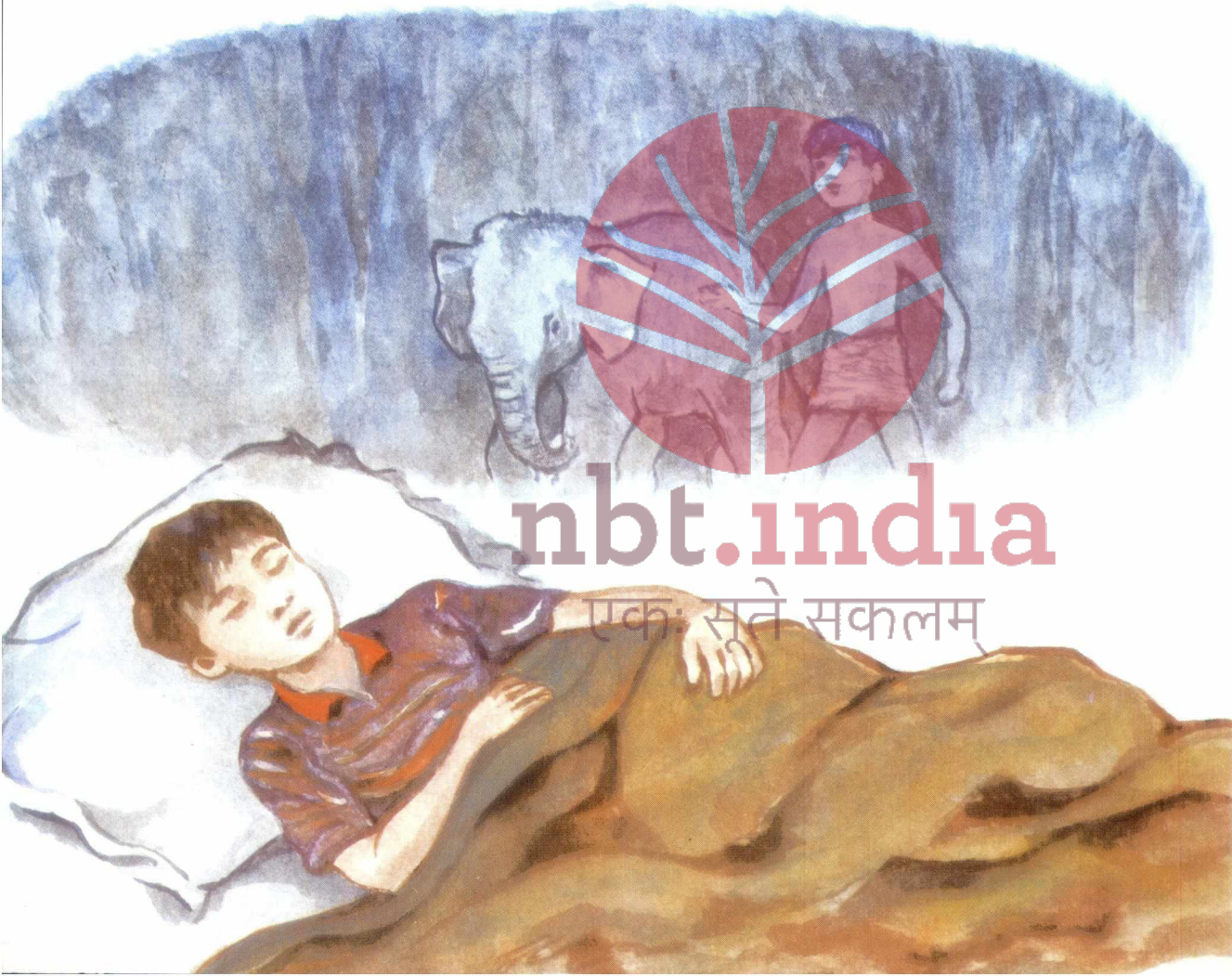
पेड़ की टहनी तोड़कर उसने शरीर को खुजलाया जैसे जंगल की गंध को शरीर पर मल लिया हो। वह तेज कदमों से आगे-आगे जाने लगा।

धीरे-धीरे वे लोग घने जंगल में पहुंच गये। हवा सांय-सांय चल रही थी। अंदर बड़े-बड़े ऊंचे पेड़ों पर बंदर उछल-कूद रहे थे। बंदरों ने नीचे इन तीन प्राणियों को देखा तो कुछ दूर तक उनके पीछे-पीछे उछलते-कूदते गये। लेकिन थोड़ी देर बाद वे रुक गये। अजय पिता की बात मानकर चुपचाप चलता रहा।

यह रास्ता ऊंचे-नीचे टीलों के बीच से होकर गया था। दोनों तरफ थे जंगली केले और तरह-तरह के बांसों के झुरमुट। एक जगह एक ऊंचे टीले के पास पके केलों का एक गुच्छा दिखाई दिया। केले देखते ही अप्पू के पेट में चूहे कूदने लगे। वह रास्ते से उतरकर केले के पेड़ के पास आ गया। लेकिन पेड़ जरा ज्यादा ऊंचा था—अप्पू की पहुंच से दूर। पिता और अजय दूर से अप्पू को देखते रहे। केले तक न पहुंच पाने के कारण अप्पू अपने सिर के जोर से पूरा पेड़ ही तोड़ने की कोशिश करने लगा। लेकिन वह इतने बड़े पेड़ को तोड़ नहीं सका। वह निराश हो गया। उसने देखा कि टीले पर चढ़कर वह केलों तक पहुंच सकता है। वह टीले पर चढ़ने लगा। अजय और उसके पिता ने देखा कि वह टीले पर चढ़ते-चढ़ते एक जगह रुक गया। उसने सूंड़ ऊपर उठाई, जैसे सर्कस में हाथी दर्शकों को नमस्कार करते हैं।

अप्पू जहां खड़ा था वह जगह जरा नीची थी। इस नीची जगह पर एक सड़े हुए लकड़ी के कुंदे पर एक बहुत बड़ा अजगर आराम कर रहा था। लगता था अजगर ने एक दिन पहले ही अपनी केंचुल बदली थी। इसलिए वह आंखों से ठीक से देख नहीं पा रहा था। अप्पू के पास आते ही वह अचानक उठ गया और फुफकारने लगा।

"हिस्स-स्स्-स्स्! कौन? क्या चाहिए तुम्हें यहां?"

"नमस्कार। मैं दरअसल यहां तुम्हें परेशान करने नहीं आया। केले ले

जाने के लिए इधर आया था। बुरा नहीं मानना।" अप्पू ने कोमल स्वर में कहा।

हाथी के बच्चे का हाव-भाव देखकर अजगर के मन में दया उपजी। उसने सिर धीरे-धीरे नीचे कर लिया।

"मेरा नाम अप्पू है। मैं पके केले खाने ही आया था, अब डरने जैसी क्या बात है? वैसे तुम्हारा नाम क्या है?" अप्पू ने पूछा।

"क्या इस जंगल में तुम नये आए हो जो मेरा नाम पूछ रहे हो? तिलो मेरा नाम है। बंदर, बकरी, हिरन आदि पशु तो मेरा नाम सुनते ही कांपते हैं। वैसे तुम्हारे साहस की भी दाद देनी होगी। खैर! जाओ, जो खाना है खा लो।"
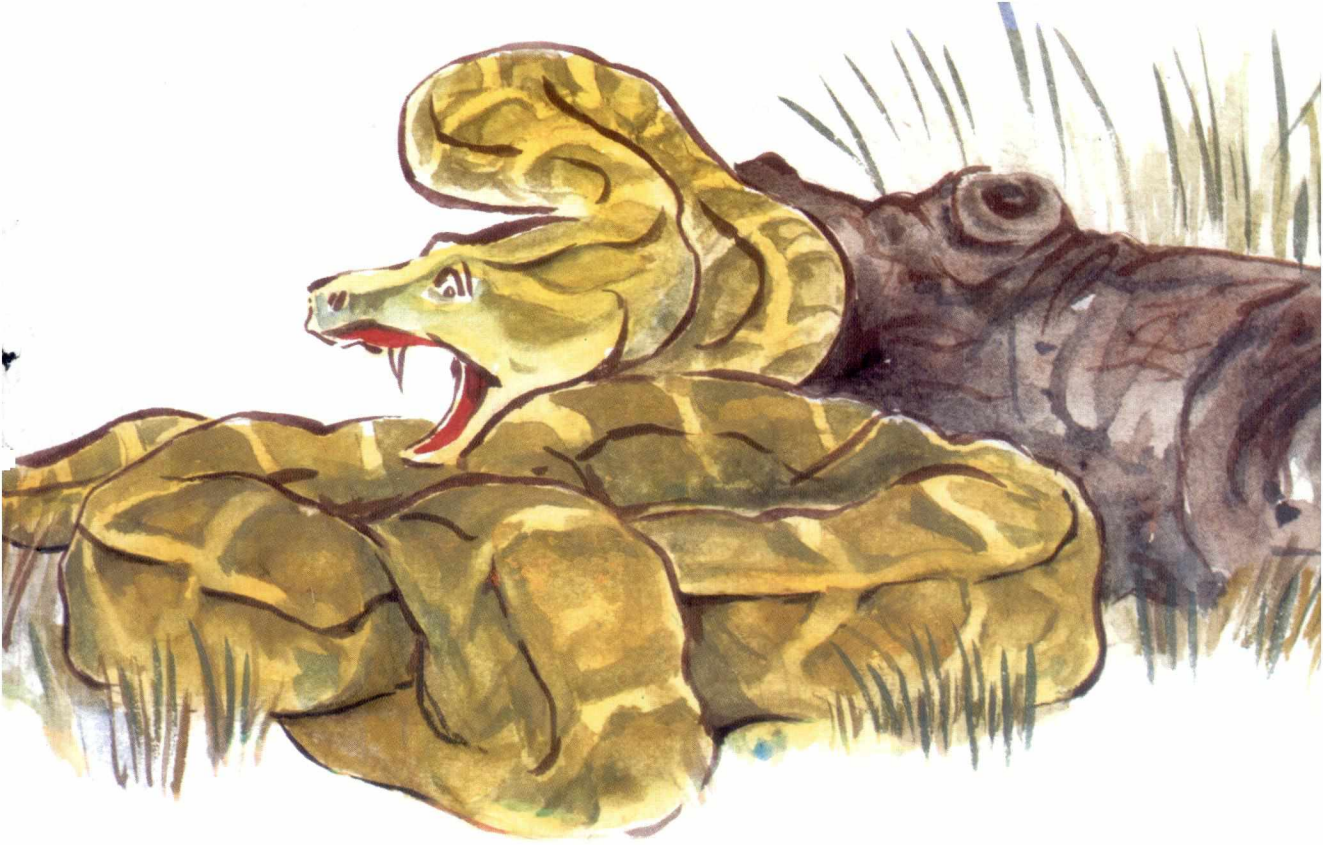
अप्पू ने जल्दी से केले का गुच्छा तोड़ा और अजय व पिता के पास चला आया। केले खाते हुए अप्पू ने अजय की ओर देखकर सिर हिलाया, "देखा मेरा कमाल?" उस दिन तीनों वापस लौट आये।

इस तरह दस दिनों तक अप्पू को जंगल में घुमाया गया, लेकिन अब तक हाथियों का झुंड नहीं मिला था। पिता ने तय किया कि अप्पू को अब हाथियों का झुंड दिखाया जाये। वे खुद वन अधिकारी थे, इसलिए जानते थे कि हाथियों का दल कब कहां हो सकता है। उस दिन भी अजय और अप्पू को लेकर पिता ऐसी ही एक जगह के लिए निकल पड़े। सुरक्षा के लिए उन्होंने साथ में बंदूक ले ली थी। उन्होंने अजय को बिलकुल चुप रहने की हिदायत

दे रखी थी। वे लोग जाते-जाते नामबर नदी के तट पर पहुंच गये। पिता ने दूर से ही देख लिया कि हाथियों का दल नदी में नहा रहा है। जमीन से सूखे पत्ते उठाकर उन्होंने उड़ाये और इस तरह हवा का रुख जान लिया। अब वे हवा के विपरीत दिशा में हाथियों के दल की ओर बढ़ने लगे। अजय ने पूछा, ''ये पत्ते क्यों उड़ाये आपने, पापा?''

''हवा से हमारी गंध हाथियों तक पहुंच जाती है। इस तरह वे दूर से ही आदमी की उपस्थिति जान लेते हैं। इसलिए हम उधर ही बढ़ते हैं जिधर हवा जा रही है।'' पापा ने बताया कि पेड़ों की आड़ में वे हाथियों के काफी नजदीक पहुंच गये हैं, लेकिन हाथियों को उनकी उपस्थिति का भान ही नहीं था। पिता ने अप्पू को हाथियों के झुंड की ओर इशारा करते हुए उधर ही जाने का संकेत किया। अप्पू धीरे-धीरे नदी की ओर जाने लगा। अजय और उसके पिता पेड़ों के झुरमुट के पीछ छिपे रहे।

हाथियों के झुंड में अप्पू की उम्र के ही तीन-चार और हाथी थे। अप्पू को नदी किनारे खड़े देखकर उनमें से एक हाथी आया और उसे नहाने के लिए बुलाया। इससे पहले अप्पू कभी नदी में नहीं उतरा था। वह डर से आनाकानी करने लगा। इसे देखकर उन्हीं की उम्र का एक हाथी और आया और दोनों ने उसे अपने बीच में लेकर नदी में जबरन उतार दिया। पहले-पहले नदी में उतरने के कारण रोमांच से अप्पू चिल्ला उठा।

चिल्लाहट सुनकर सभी हाथियों ने अप्पू की ओर देखा। एक विशाल दंतुल हाथी अप्पू की ओर बढ़ गया। अपनी लंबी सूंड़ से दंतुल ने अप्पू के शरीर को सूंघा। यह सब देखकर अजय ने पिता से पूछा, ''पहचान नहीं पाने पर क्या दंतुल अप्पू को मार डालेगा?''

''अभी रुको, क्या होता, देखो।'' यह कहकर पिता ने अजय को चुपचाप रहने को कहा।

दंतुल ने एक बार फिर सूंड़ से अप्पू का शरीर सूंघा। इस बार उसने संदेह
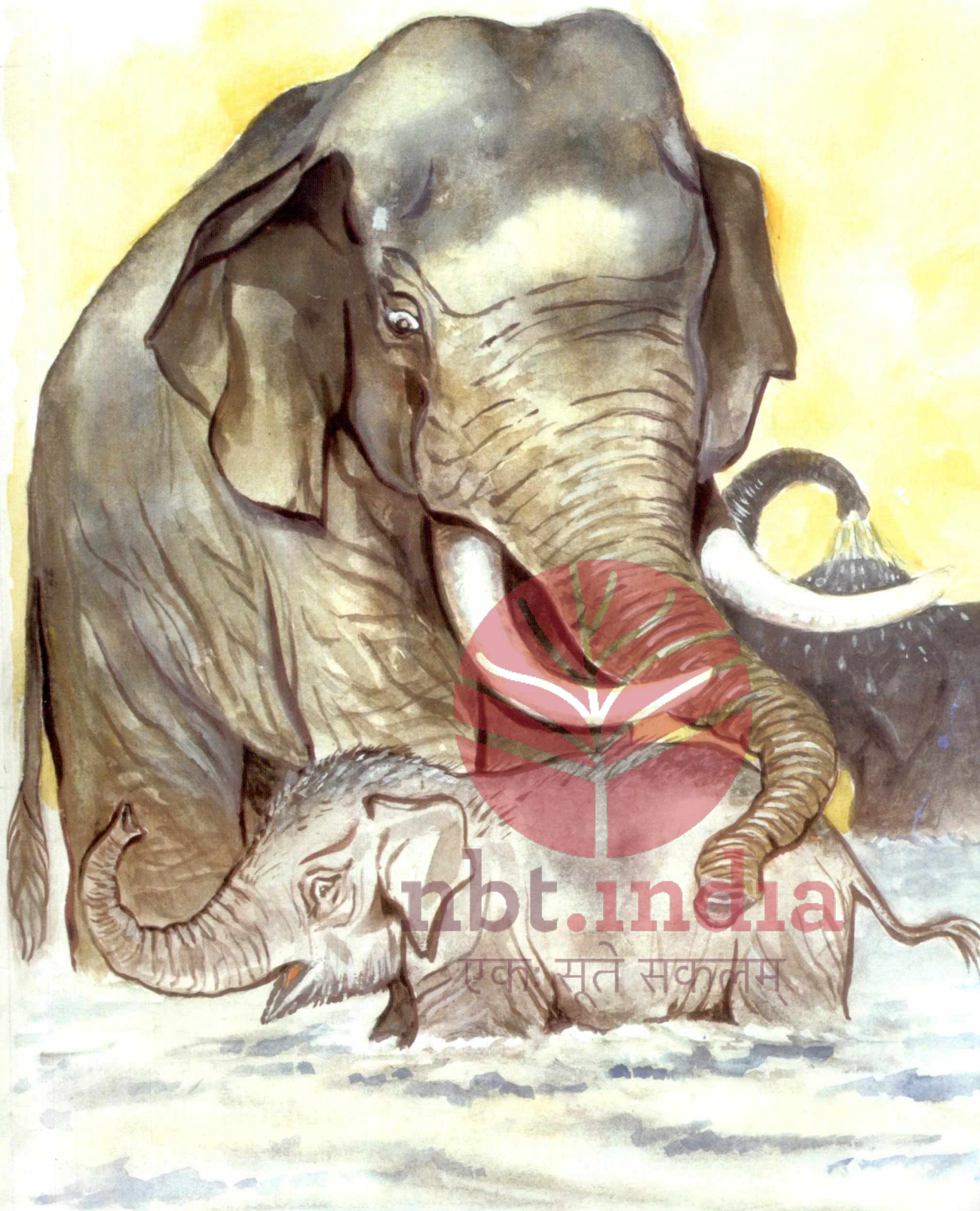
अजय और पिता की ओर देखकर सूंड़ ऊपर उठा दी जैसे दोस्तों से विदा ले रहा हो। वह फिर घूमकर मालती नामक हथिनी के साथ हो लिया।

जब तक हाथियों का झुंड आंखों से ओझल नहीं हो गया, अजय उसी तरफ देखता रहा। पेड़ों की आड़ में जब अप्पू खो गया तो डबडबाई आंखों से अजय ने पिता की तरफ देखा।

फिर बोला, "अप्पू को वापस क्यों नहीं लाए, पापा?"

"देखो, कितने अरसे बाद अप्पू को उसकी मां मिली है? अब उसे वापस कैसे लाता? लाने पर क्या वह दुखी नहीं होता?"

अजय और उसके पिता, दोनों उदास मन से घर लौट आये। अप्पू को भूल पाना दोनों के लिए आसान नहीं था।

अप्पू को जंगल में छोड़ आने के बाद कई दिनों तक अजय का किसी काम में मन नहीं लगा। हाथी के इस बच्चे के साथ उसका दिन मजे से बीत जाता था। चाय-नाश्ते से लेकर शाम को बाहर घूमने तक हर चीज में अप्पू अजय के साथ रहता था। भुलु को भी अप्पू का अभाव खलने लगा।

इधर टॉम भुलु की ओर भौंका करता, "क्यों बे इस बार तुझे कौन बचाता है, देखता हूं!" भुलु सुनकर भी अनसुना कर देता। वह अजय के साथ-साथ रहता। अजय और भुलु दोनों शाम को जंगल के पास जाकर इंतजार करते। हो सकता है अप्पू कहीं से निकल ही आये। इस तरह चार महीने बीत गये।

एक दिन शाम के बाद अजय अपनी कापी में एक हाथी के बच्चे की चित्र बना रहा था। पिता बाजार गये हुए थे। मां पास ही बैठी कुछ बुन रही थी। भुलु एक कुर्सी पर सोने की कोशिश कर रहा था। अचानक भुलु भौंकने लगा— भौं-भौं। भौंकते हुए छलांग लगाकर सामने फाटक की ओर दौड़ पड़ा। उसी समय अजय के पिता भी बाजार से लौटकर फाटक तक पहुंच चुके थे। जैसे ही वे फाटक खोलकर अंदर आने वाले थे उन्होंने अपने पीछे एक हल्के धक्के का अनुभव किया। उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, पीछे अप्पू खड़ा था। उन्होंने अप्पू के शरीर पर हाथ फिराकर अंदर कदम बढ़ा दिए। भुलु ने दोनों का अंदर स्वागत किया। पिता ने बाहर से ही आवाज दी, "आओ तो अजय, देखो कौन आया है!"

अजय ने बाहर आकर देखा तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह चिल्ला पड़ा, "अ-प्-ऊ!"

शोरगुल सुनकर मां भी बाहर आ गयीं। बाहर उन्होंने अजय को अप्पू से मिलते देखा तो उनकी आंखें छलछला आयीं। अप्पू हुफ-हुफ कर शायद जंगल में अपनी मां के साथ क्या-क्या हुआ बता रहा था। मां ने कई केले अप्पू को देकर अपना प्यार जताया। अप्पू ने भी सूंड़ से मां का हाथ छुआ। मानो कह रहा हो, "मुझे दुख है मां! मेरे आने में देर हो गयी?"

उस दिन से अप्पू अजय के यहां देखा जाने लगा। इधर उसे वापस आया देखकर अब टॉम ने भुलु को देखकर भौंकना बंद कर दिया। अब भुलु ही कभी-कभी उसे लटका रह जाने वाली घटना याद दिलाकर उसकी हंसी उड़ाता।

आजकल अप्पू को खाने का सामान लाकर नहीं देना पड़ता। वह खुद ही जंगल में जाकर पेट भर खा आता। दस दिन बाद एक सुबह अजय ने पाया कि अप्पू घर पर नहीं है। जब वह शाम तक भी लौटकर नहीं आया तो दूसरे दिन पिता कुछ वनकर्मियों के साथ उसे खोजने जंगल में गये। वहां उन्होंने देखा कि अप्पू अपने पुराने झुंड में ही घूम रहा है। इससे संतुष्ट होकर पिता वापस लौट आये। महीने भर बाद एक दिन फिर अप्पू घर पर आया। करीब पंद्रह दिन बाद वह लौट गया। इस तरह जंगल और लोगों के बीच आना-जाना करते हुए वह इन दोनों के बीच सेतू बन गया।

इस बार अप्पू को अजय के घर से लौटे दो ही दिन हुए थे। वह झुंड के साथ जंगल के बिलकुल दूसरे सिरे पर पहुंच गया था। रात में भी हाथी अपने खाने लायक चीजें पहचान लेते हैं। वापस लौटते समय रास्ते के किनारे कुछ टीले मिले। अचानक झुंड के हाथियों ने देखा कि आगे दो टीलों के बीच पगडंडी टूट गयी और आवाज आयी—“धड़ा...म”। उनका नेता गजराज एक गहरे गड्ढे में गिर गया था। अपने नेता दंतुलराज की असहाय अवस्था देखकर झुंड के हाथी चिंघाड़ने लगे। गजराज ने भी गड्ढे में से निकलने की कोशिश की, लेकिन जल्दी ही हार मान ली। उन सबका डर और बढ़ गया। उन्हें आदमियों की आवाजें सुनाई देने लगीं। लेकिन झुंड के हाथी दंतुलराज को इस तरह छोड़कर गये नहीं!

यह गड्ढा शिकारियों ने खोदा था। हाथी-दांत चुराने के लिए ये शिकारी जंगल में गड्ढा खोदकर उस पर डाल-पत्ते बिछा देते थे। दूर से कुछ पता ही नहीं चलता। एक हाथी के फंस जाने के बाद वे झुंड के दूसरे हाथियों

को भगाने का उपाय सोचने लगे। अप्पू को आदमियों की आवाजों से कोई डर नहीं लगा, क्योंकि वह आदमियों के साथ रह चुका था। लेकिन वह यह समझ गया कि दंतुलराज के गिरने और आदमियों की आवाजें आने में जरूर कोई संबंध है। इसी समय उसे अजय के पिता की याद आई। उसे लगा कि वे ही इस समय सहायता कर सकते हैं। बस वह अजय के घर की ओर दौड़ पड़ा।

अजय के घर पहुंचते-पहुचते सुबह हो चुकी थी। आते ही अप्पू अजय के

पिता का हाथ सूंड़ से पकड़कर उन्हें बाहर की ओर खींचने लगा। अजय के पिता तुरंत समझ गये कि अप्पू उन्हें किसी घटना के बारे में बताना चाहता है। उन्होंने तुरंत अपनी बंदूक उठायी और साथ दो वनकर्मियों को लेकर जंगल की ओर निकल पड़े।

लगभग तीन घंटे के बाद वे लोग उस जगह पहुंच गये जहां दंतुलराज फंसा हुआ था। सुबह हो जाने के कारण झुंड के हाथी उसे अकेला छोड़कर चले गये थे। अजय के पिता अप्पू के साथ चौकन्ने होकर आगे बढ़े। पिता ने दूर से देखा कि तीन लोग झुक-झुककर कुछ देख रहे थे। साथ ही उन्होंने हाथी की चिंघाड़ सुनी—"हुऊफ।"

उन्होंने वनकर्मियों को आदेश दिया कि वे दोनों ओर से शिकारियों को घेर

लें। खुद पीछे से उन पर धावा बोलने के लिए तैयार हो गये। उन्होंने देखा कि शिकारियों में से एक ने बंदूक उठा ली है। वह दंतुलराज को गड्ढे में ही मारना चाहता था। इसी समय पिता ने सीटी बजाकर वनकर्मियों को इशारा किया और पीछे से बंदूक तानकर शिकारियों को चेतावनी दी, "सावधान, अपनी बंदूक फेंक दो।"

बंदूक वाले के दोनों साथियों ने कुल्हाड़ी से उन पर हमला करने के लिए कदम बढ़ाये। लेकिन तब तक वनकर्मी उन्हें पकड़ चुके थे। इधर अप्पू ने तेजी से आगे बढ़कर बंदूक वाले शिकारी को गले से पकड़कर उसे जमीन पर पटक दिया। उसकी बंदूक छूटकर दूर छिटक गयी।

तीनों शिकारियों के हाथ पीछे बांध दिए गये। पिता ने वनकर्मियों को आदेश किया कि वे गड्ढे को एक तरफ समतल कर हाथी को बाहर निकालें। वे खुद तीनों शिकारियों और अप्पू के साथ घर की ओर लौट पड़े।

गड्ढे के किनारे पर सूंड़ उठाकर अप्पू ने आवाज निकाली, "ताऊजी, संकट टल गया, मैं अब चलता हूं।"

दंतुलराज ने सूंड़ उठाकर उसे आशीर्वाद दिया। शाम को घर पहुंचने पर पिता ने तीनों शिकारियों को पुलिस को सौंप दिया।
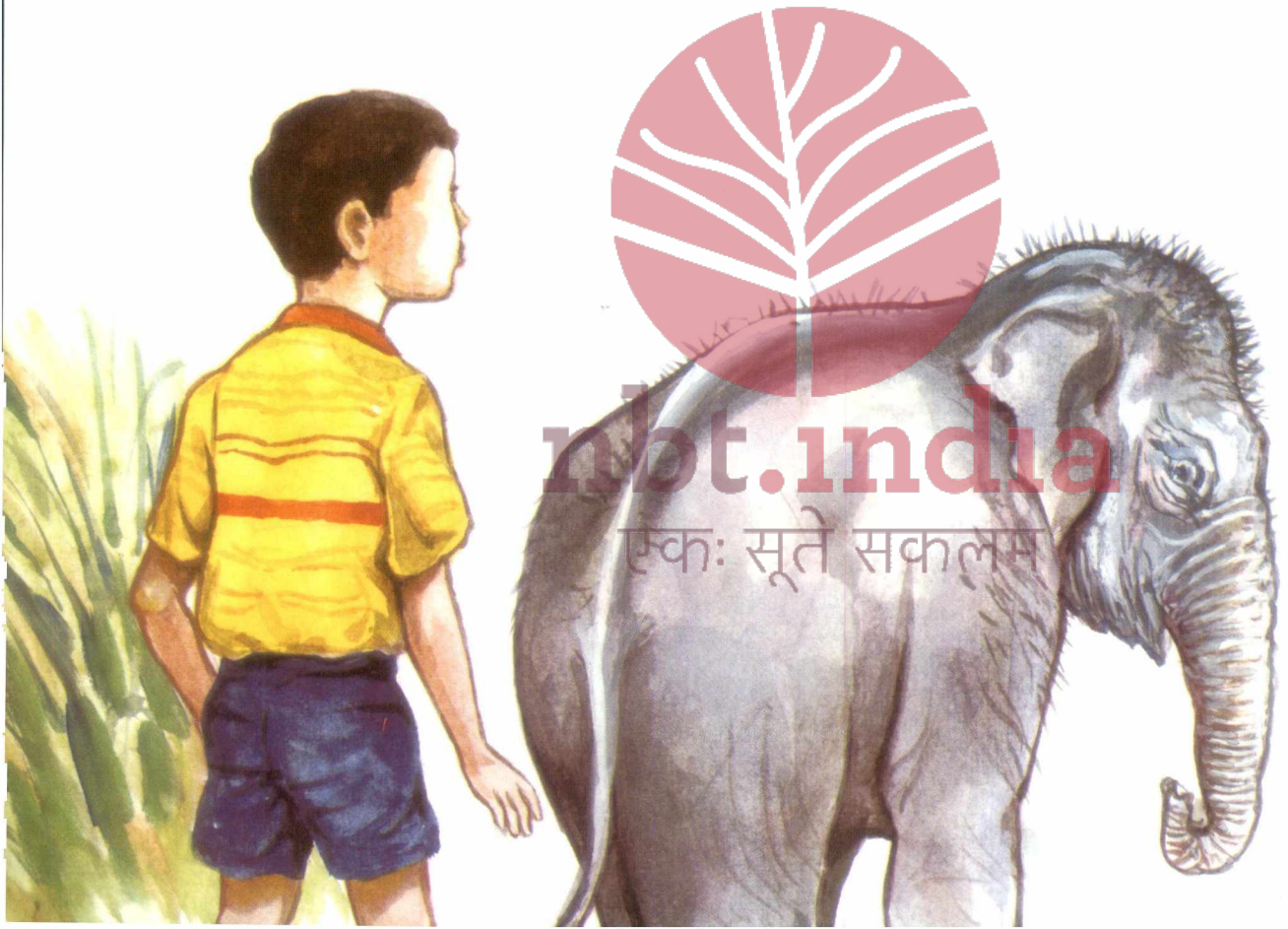
अजय के पिता ने इस घटना का वर्णन अखबारों में लिख डाला। इससे लोगों को बड़ी खुशी हुई। अप्पू और अजय को बधाई देने बहुत से लोग आये। लेकिन कुछ लोग थे जिन्हें इस खबर से बिलकुल खुशी नहीं हुई। उनके मन में कुछ दूसरी ही खिचड़ी पक रही थी।

एक दिन शाम को अजय और अप्पू हमेशा की तरह घूमने निकले। काठ का पुल पारकर सामने एक मोड़ पड़ता था। मोड़ पर उन्होंने देखा कि एक कार खराब हुई खड़ी थी। एक आदमी गाड़ी ठीक कर रहा था तथा दूसरा ड्राइवर की सीट पर बैठा था। अजय और अप्पू जैसे ही उनके पास पहुंचे, बाहर खड़े आदमी ने अजय का हाथ पकड़ लिया। अजय ने छुड़ाने की कोशिश की और चिल्लाया, ''अप्पू!'' इस बीच गाड़ी में बैठा दूसरा आदमी भी हाथ में बंदूक लेकर नीचे उतर आया।

अप्पू समझ गया कि ये अच्छे आदमी नहीं हैं। उसने तेजी से अपनी सूंड़ से पहले आदमी का पैर पकड़कर उसे जमीन पर गिरा दिया। बंदूक वाले आदमी ने अप्पू की ओर गोली चला दी। गोली अप्पू की पीठ पर लगी। गुस्से और दर्द से अप्पू पागल हो उठा। उसने सूंड़ से बंदूक वाले को जमीन पर गिराकर उसे पैर से कुचल दिया। बड़ा हाथी होता तो उसकी उसी समय मौत हो जाती। लेकिन अप्पू का वजन अभी कम था। इसलिए वह आदमी मरा नहीं, बस बेहोश ही हुआ। दूसरा आदमी मौका देखकर भागने लगा तो अप्पू ने पकड़कर उसे गाड़ी पर पटक दिया। सिर पर चोट लगने के कारण वह भी बेहोश हो गया।

गोली की आवाज और लोगों का हो-हल्ला सुनकर वन विभाग के दफ्तर से दो वनकर्मी निकल आये। इन लोगों ने अजय से घटना के बारे में सुनकर दोनों बदमाशों को बांध डाला और गाड़ी में डालकर उन्हें अजय के पिता के पास ले आये। पिता ने दोनों बदमाशों को पुलिस को सौंप दिया। ये दोनों बदमाश उन्हीं शिकारियों के साथी थे। ये अपने साथियों को जेल से छुड़ाने के लिए अजय का अपहरण करना चाहते थे।

पिता ने पशु चिकित्सक को बुलाकर अप्पू की चिकित्सा की व्यवस्था की। अप्पू का घाव ज्यादा गहरा नहीं था। वह जल्दी ही ठीक हो गया।

इस बीच यह सारी घटना फोटो सहित देश के बड़े-बड़े अखबारों में छप गयी। अजय के पिता की जंगली जानवरों के प्रति ममता और प्यार की बातें अब घर-घर की कहानी बन गयीं। अप्पू भी देश भर में प्रसिद्ध हो गया।

अजय के पिता की तरक्की हो गयी। सरकार ने उनका शहर में तबादला कर दिया। इससे परिवार में कोई भी खुश नहीं हुआ, क्योंकि शहर जाने पर अप्पू को छोड़ना पड़ता। पिता ने दस दिनों की छुट्टी ले ली।

एक दिन घर के बरामदे में बैठे अजय के पिता कुछ सोच रहे थे। अप्पू को कहां छोड़ा जाये। जंगल में या चिड़ियाघर में। चिड़ियाघर में सुना था कि जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं होता। इधर जंगल में भी पता नहीं अप्पू को पेट भर खाना मिलेगा या नहीं। इसी समय उनके दफ्तर का चपरासी एक सरकारी चिट्ठी लेकर आया। चिट्ठी में उन्हें वन विभाग के सचिव ने शहर बुलाया था।

दूसरे दिन पिता शहर में वन विभाग के सचिव के दफ्तर में पहुंच गये। सचिव महोदय की बात सुनकर पिता की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उनकी सारी चिंता दूर हो गयी। दरअसल भारत सरकार ने असम सरकार से एक हाथी का बच्चा भेजने का अनुरोध किया था। यह हाथी का बच्चा राष्ट्रपति महोदय जापानी बच्चों को उपहार देना चाहते थे। सचिव महोदय अप्पू की बात अखबारों में पढ़ चुके थे, इसलिए उन्होंने अप्पू को जापान भेजने का प्रस्ताव रखा। अजय के पिता ने खुशी-खुशी इस पर हां कह दी।

घर आकर पिता ने अजय और उसकी मां को यह खबर सुनाई तो उन्होंने भी खुशी जाहिर की। इस बीच पिता ने अप्पू का जंगल जाना बंद करा दिया।

निश्चित दिन वे सभी दिल्ली जाने के लिए निकले—पिता, अजय, अजय की मां और अप्पू। अप्पू को नहला-धुलाकर तैयार कर दिया था। करीब ग्यारह बजे सेना का बड़ा-सा हेलिकॉप्टर वन विभाग के दफ्तर के मैदान में उतरा। अजय ने आज पहली बार इतना बड़ा हेलिकॉप्टर देखा था।

हेलिकॉप्टर की आवाज से पेड़ों पर बैठे कौवे उड़कर कांव-कांव करने लगे। उन्होंने सोचा यह इतना बड़ा पक्षी कहां से आ गया। हेलिकॉप्टर के उतरने के बाद भी मैदान में धूल उड़ती रही। अजय सोच रहा था कि हाथी जैसा विशाल जानवर इसमें कैसे चढ़ पायेगा। जब तक अप्पू उसमें चढ़ नहीं गया तब तक उसे विश्वास नहीं हो पा रहा था। पिता के कहे अनुसार अजय सूंड़ पकड़कर आगे-आगे चला और अप्पू आसानी से हेलिकॉप्टर में चढ़ गया। वे तीनों भी बैठ गये। रास्ते भर अप्पू और अजय आपस में छेड़खानी करते रहे।

दूसरे दिन दिल्ली के हवाई अड्डे पर राष्ट्रपति महोदय पहुंचे। वहां जापान सरकार के प्रतिनिधि को अप्पू को सौंपा जाना था। अप्पू के गले में फूलों की माला में गुंथा एक पदक झूल रहा था। पदक पर लिखा था, "भारत और जापान के बच्चों की दोस्ती के लिए भारत के राष्ट्रपति का उपहार।" अप्पू के हवाई जहाज की सीढ़ियों तक पहुंचते ही अजय की आंखों से आंसू निकल पड़े। उसे पता था कि अब अप्पू से कभी मिलना नहीं होगा।

हवाई जहाज की सीढ़ियों के पास पहुंचकर अप्पू ने चारों ओर नजरें दौड़ाईं। जब उसे अजय नजर आया तो वह उसके पास पहुंचा। प्यार से अपनी सूंड़ उसके शरीर पर फिराने लगा। वहां जमा सारे लोगों की आंखें दो मित्रों के इस तरह बिछुड़ने को देखकर भीग गयीं।

अजय ने कहा, "जाओ दोस्त, तुम दो देशों के बच्चों के बीच दोस्ती का सेतू बनकर जा रहे हो। तुम्हें वहां भी मेरे जैसे कई मित्र मिलेंगे।"

अप्पू को वापस सीढ़ियों तक ले जाने के लिए हवाई अड्डे के कर्मचारी आ गये। अजय भी रूमाल से अपनी आंखें पोंछते हुऐ भीड़ के पीछे हो लिया।

मुद्रण : कम्प्युडाटा सर्विसेज, नई दिल्ली - 20